वर्तमान हिन्दी उपन्यास में सामाजिक यथार्थ

मोनिका*

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, एन. आई. आई. एल. एम. विश्वविद्यालय कैथल, भारत

***Email ID**: monika52200@gmail.com*

Accepted: 05.09.2022 **Published**: 01.10.2022

मुख्य शब्दः वर्तमान हिन्दी उपन्यास, सामाजिक यथार्थ।

शोध आलेख सार

सामाजिक यथार्थ का अर्थ है – समाज के यथार्थ अर्थात् वास्तविकता का चित्रण आम प्रचलित शब्दों में मनुष्य द्वारा की गई सामान्य क्रियाओं का सच्चा चित्रण सामाजिक यथार्थ कहा जाता है । हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ के अन्तर्गत आर्थिक, राजनीतिक विसंगतियों एवम् विद्रूपताओं का व्यापक अंकन हुआ है जो बदल रहे समाज की वास्तविक स्थिति का सच्चा चित्र प्रस्तुत करता है ।

पहचान निशान

**Corresponding Author*

हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार , " आर्थिक, सामाजिक , राजनीतिक , सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों का समुच्चय ही सामाजिक यथार्थ है । ये शक्तियों मिलकर उस सामाजिक वातावरण का निर्माण करती है जिससे हमारे संस्कारों की सर्जना होती है ।"1

कुलदीप कौर का सामाजिक यथार्थ के विषय में कहना है , " सामाजिक यथार्थ ऐसी रचना प्रक्रिया है जिसमें लेखक बिना किसी भय अथवा पक्षपात के सामाजिक विसंगतियों विडम्बनाओं एवम् भ्रष्टाचारों से त्रस्त समाज की दयनीय स्थितियों को उसके यथार्थ रूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत करते हुए प्रगति की ओर अग्रसर करता है तथा सामाजिक उत्थान की शक्तियों को पहचानते हुए मूल्यों की स्थापना करता है ।"2

साहित्य तथा समाज का घनिष्ठ संबंध है तथा सामाजिक यथार्थ साहित्य की एक व्यापक जीवन दृष्टि है । अतः की एक महत्त्वपूर्ण विधा होने के कारण उपन्यास भी सामाजिक यथार्थ से अछूता नहीं रहा है । वर्तमान हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ

का व्यापक चित्रण मिलता है । इस संदर्भ में चयनित उपन्यासों का अध्ययन इस प्रकार है :-

भूमंडलीकरण , औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप जिस तीव्रता से सामाजिक परिवेश बदल रहा है उसने मानवीय संवेदना को बहुत गहनता से प्रभावित किया है परिवार का पारम्परिक ढांचा टूट चुका है जिसके कारण पति - पत्नी तथा अन्य पारिवारिक नाते - रिश्तें भी प्रभावित हुए हैं । आज की नारी घर से बाहर निकलकर नौकरी करके पति के समान घर की आर्थिकता में सहयोग देती है तो वह घर में भी समान अधिकार चाहती है । नौकरी करने वाली महिला भी स्वयं को मात्र गृहिणी न कहलाकर होममेकर के रूप में अपने अस्तित्व का सम्मान चाहती है , परन्तु नारी के प्रति सामंतीवाद सोच अब भी नहीं बदली है । " बोल मेरी मछली ' उपन्यास में सपना नाटक एवम् नृत्य का शौक रखती है परन्तु घर के सभी काम कर लेने के पश्चात् भी वह अपने शौक की पूर्ति हेतु घर से बाहर नहीं जा सकती क्योंकि उसके पति एवम् ससुराल के अन्य लोग इसे पसन्द नहीं करते । उसका पति जब ऐसे नाटक खेलकर की गई कमाई से ज्यादा पैसा उसे हर महीने देने की बात कहता है तो सपना के आत्मसम्मान की गहरी चोट पहुंचती क्योंकि वह अपने शौक की तुलना करने को नहीं सह ती । यही कशमकश सपना तथा उसके पति के दामपत्य संबंधों को टूटने के करीब ले जाती है ।

धूल पौधों पर ' की नायिका एक शिक्षित स्त्री होने के कारण कथित धर्मगुरु कहलाने वाले पति द्वारा जबरदस्ती दीक्षा दिलवाकर पूजा में बैठने से स्पष्ट मना कर देती है । आचरणहीन पति के व्यवहार से चिढ़ कर वह उसके द्वारा जबरदस्ती शारीरिक सम्बन्धों को स्थापित करने पर वह अपना विद्रोह प्रकट करने से नहीं चूकती , " उसका सम्पूर्ण अधिकार है , मेरा अधिकार कुछ नहीं । अपनी इच्छा अनिच्छा रखने का भी अधिकार नहीं । सिर्फ इसलिए कि मैं नारी हूँ । पति द्वारा उसे शर्तों के तहत घर से निकाल दिए जाने पर वह उस घर में वापसी अपनी शर्तों के अनुसार करके दीपस्थ में पत्नी के महत्व को रेखांकित करती है । ‘ एक ब्रेक के बाद ' उपन्याध में के . बड़ी - बड़ी कंपनियों में नाम है । जिस उच्च - शिक्षित पत्नी की बोलने और समझने का करवाया था , उसे आज उच्च पद के अहं में कोई भी बात इस प्रकार का समझाता जी . का देश प्रतिभा पर रीझ कर उसने विवाह है मानो वह कोई अनपढ़ एवम् गंवार महिला है । वही पत्नी उसे उसके मित्र गुरचरण की डायरी में लिखे " सी " के गूढार्थ बताती है , " तीन के बिना कोई समाज को जान ही नहीं सकता कम्यूनिटी , कास्ट और क्लास इन तीनों के घेराव में हर आदमी का वजूद फंसा पड़ा है । अपने उत्तर द्वारा वह पति को अपनी योग्यता का परिचय देती है । इसी उपन्यास में भट्ट के बार - बार नौकरी छोड़ देने पर उसकी पत्नी बहुत परेशान होते हुए

भी चुप रहती है । इस पर भट्ट का कहना है , " निती का स्वीकार सचमुच मेरा भारत महान है , क्योंकि यहाँ ऐसी पत्नियाँ मिलती है । " वह उसके भीतर की पीड़ा को नहीं समझ पाता लेकिन अपनी आर्ट गैलरी खोलने एवम बहुत पैसा कमा लेने पर वह अपनी पत्नी में आए बदलाव को देखकर हैरान हो जाता है जो रेड वाईन , वाईट वाईन आदि नि : संकोच पीने लगती है । अब भट्ट को लगने लगता है कि उसकी पत्नी अपनी जिन्दगी को अपनी इच्छानुसार खुलकर जीने लगी है जो शायद भट्ट की समझ बाहर की बात है ।

आधुनिक समाज में एक अन्य प्रवृत्ति उभर कर सामने आई है विवाहेतर सम्बन्ध व्यक्ति स्वातंत्र्य के नाम पर आज अनैतिक संबंध फल - फूल रहे है ' बोल मेरी मछली ' उपन्यास में सपना पति द्वारा अपेक्षित समय नदिए जाने तथा घर से बाहर जाने की अनमुमति न मिलने पर अकेलेपन की शिकार हो जाती है । इसलिए वह सामने घर में रहने वाले अविनाश को दूर से ही देखकर आकर्षित हो जाती है तथा पति द्वारा निरन्तर उपेक्षित किए जाने पर वह प्रतिशोध की भावना में आकर अविनाश से अनैतिक संबंध कायम करना चाहती है ; ' नानी अम्मा मान जाओ ' में कथा नायिका मिनी का पति प्रताप मिनी से विवाहोपरान्त भी सुमित्रा से अवैध संबंध बनाता है तथा उससे विवाह करवाकर घर भी ले आता है । मिनी की बेटी कन तथा उसका प्रेमी आदित्य विवाहित होते हुए भी अपने जीवन साथियों से असंतुष्ट होने के कारण विवाहेतर सम्बन्ध कायम कर लेते हैं । कनु तो आदित्य के पुत्र की माँ भी बन जाती है , भले ही समाज में वह उसे अपने पति की सन्तान के रूप में ही प्रस्तुत करती है धूल पौधों पर ' में बुवागुरु अपने पास ज्योतिष सीखने वाली लड़की निशा से विवाहेत्तर संबंध स्थापित करता है । निशा द्वारा उसे पत्नी से तलाक ले कर निशा से विवाह की माँग करने पर वह बेशरमी - उत्तर देता है , " व्यर्थ की जिम्मेदारियों ओढ़कर अपना जीवन नष्ट करना । हम ऐसे ही ठीक है । विवाह की क्या आवश्यकता ? ' एक ब्रेक के बाद ' उपन्यास में निर्मला , मणी , शौरी जैसी महिलाएँ विवाहित होते हुए भी गुरुचरण के साथ संबंध बनाती है शीरी के पति द्वारा उसे गुरचनण को छोड़ने के लिए मजबूर करने पर वह एक किताब के ऊपर उसका उत्तर लिखती है " किसी दूसरे की चेतना पर हावी होकर उसे यातना देना क्या मनुष्यता है ताकि वह तुम्हारी तरह सोचने लगे ? तुम मेरी खाल उधेड़ लो मेजर पर मैं गुरु को नहीं छोड़ूंगी । " इस प्रकार विवाहेतर संबंधों के लिए वह अपने दाम्पत्य को भी दाँव पर लगा देती है ।

बदलते सामाजिक परिवेश ने माता - पिता तथा संतान के आपसी संबंधों को भी प्रभावित किया है । हमारी सामाजिक परम्परा , जिसमें पिता के पास परिवार का मुखिया होने के नाते प्रत्येक निर्णय लेने का अधिकार था . अब टूटती दिखाई देती है

आज बच्चे अपनी इच्छा से जीवन जीना चाहते है , माता - पिता द्वारा की गई टोकाटाकी उनके लिए असहनीय है । ' नानी अम्मा मान जाओ ' में निम्मो द्वारा एक गम्भीर गलती किए जाने पर माँ द्वारा डाँट दिए जाने पर वह अपने हाथ की नस काट लेती है । एक अन्य स्थान पर वह अपनी गलती स्वीकारने के स्थान पर अत्यनंत उद्दंडता से कहती है , क्या कर लोगे तुम लोग ? मारोगे , डॉटोगे , बाथरूम में बंद कर दोगे कर लो जो कुछ करना है , पर मैं जाऊँगी । एक ब्रेक के बाद उपन्यास में माता - पिता तथा बच्चों के आपसी सम्बन्धों का खिचाव इस प्रकार स्पष्ट हुआ है , " आपका बेटा किस काम से मुबई गया है , भला आपको कूवत है पूछने की । " रंगनाथन अपना दुःख व्यक्त करता हुआ कहता है , " दोनों बेटा - बेटी कुछ नहीं समझते .... बेटी पत्रकार बनी टी . वी . चैनल के साथ जाने कहाँ - कहाँ घूम रही है ... निमोनिया होकर अस्पताल में भर्ती अपनी माँ अभी तक जिन्दा है या नहीं , यह जानने की उसे फुर्सत नहीं । "

आज के युवाओं को अपनी सोच एवम मान्यता एँ हैं जिनके सामने सामाजिक मान्यताएँ कोई महत्त्व नहीं रखती । ' नानी अम्मा मान जाओ ' में निम्मी अपने प्रेमी के विषय में बात करती हुई नानी से कहती हैं , " मुझे व रेवा को आपस में कोई प्राब्लम नहीं , न ही वह मेरे अतीत या मैं उसके अतीत की खोजबीन करती हूँ न ही हमें एक दूसरे में वर्जीनियटी की खोज है , " " एक ब्रेक के बाद में के . वी . युवा मानसिकता का बहुत ' सटीक शब्दों में वर्णन किया है , " इन बच्चों के पास नौकरियाँ छोड़ने बदलने या अपनी पढ़ाई से कोई ताल्लुक के लिए सबसे बड़ी समस्या अच्छा लग रहा है , आज करेंगे न रखने वाली कोई नौकरी पकड़ने के पीछे वजहें बिल्कुल दूसरी हैं । इन बच्चों है कि ये बहुत जल्दी किसी भी काम से बोर हो जाते है .... इन्हें जो आज और जो कल अच्छा लगेगा कल करेंगे । " परम्पराओं से हट कर चलने वाली युवा मानसिकता कहीं - कहीं सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन की ओर भी संकेत करती है । जैसे - ' नानी अम्मा मान जाओ ' में निम्मो अत्यन्त सहजता से अपनी नानी को उनके मित्र डॉ . पार्थ से विवाह करवा लेने के लिए कहती है क्योंकि वह अनुभव करती है कि उसकी नानी अकेली है तथा उसे कोई साथी चाहिए ।

आर्थिक उदारीकरण की नीतियों ने आज विदेशी व्यापार के लिए द्वार खोल दिए है जिसके कारण देश में बड़ी - बड़ी मल्टीनेशनल कंपनियों ने अपने पाँव पसार लिए है फलस्वरूप देशी व्यापार को बहुत ठेस पहुँची है ' एक ब्रेक के बाद में इस सच्चाई को इन शब्दों में प्रकट किया गया है , " ये विदेशी लोग बड़े जालिम है उन्हें क्या इस देश को भूखी नगी जनता को खिलाने पिलाने की चिन्ता है जो यह सब सवाल उन्हें तो सिर्फ अपना माल सस्ते में बनवाने की फिक्र है क्योंकि उनके अपने देश में लगभग मुफ्त

माल बनवाने वाले गुलाम कहाँ मिलेंगे ? इन मल्टीनेशनल कंपनियों ने ब्रांड के नाम पर अपना माल भारत के इस बाजार में इतना फैला दिया है कि हमारा खुद का माल इनके सामने कमजोर पड़ गया है । इसी उपन्यास में कर्ज से दबे हुए किसानों द्वारा आत्महत्या कर लेने का भी दारुण चित्रण हुआ है । बुरी तरह से कर्ज में दबे होने तथा मुक्ति मिलने की संभावना दिखाई न देने पर उन्हें सारे झंझटो से मुक्ति पाने का एकमात्र विकल्प आत्महत्या ही दिखाई देती है । कृषक वर्ग की इस दुःखद स्थिति को वर्णित करते हुए उपन्यास इस दिशा में गम्भीर चिन्तन को ओर संकेत करता प्रतीत है ।

वर्तमान युग में राजनीति और नैतिकता के बीच का सम्बन्ध लुप्त हो चुका है । लोकतांत्रिक देश की चुनाव प्रणाली भ्रष्ट हो चुकी है । वोट प्राप्त करने के लिए राजनैतिक नेता कोई भी अनैतिक कार्य कर सकते है अशिक्षित तथा निर्धन लोगों की वोट के बदले में उन्हें धन तथा अनेक प्रकार के प्रलोभन दिए जाते हैं । ' आखिरी मंजिल उपन्यास में एक राजनीतिक पार्टी द्वारा गरीब औरतों को साड़ियाँ बाँटने की घोषणा करके उनके सामने साड़ियों का गट्ठर फेंक दिए जाने के परिणामस्वरूप मची भगदड़ के कारण इक्कीस औरतों के मर जाने तथा अनेक के घायल हो जाने पर देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री का बयान सुनकर माधव दयाल हैरान होकर सोचते है है , " अपनी जवानी में पुराने लखनऊ की गलियों में पत्रकार होकर रहे निम्न मध्यवर्गीय प्रधानमंत्री को देश का अन्धेरा देखने के लिए अपना तन ढोकने को साड़ी लूटती इक्कोस महिलाओं को मृत्यु दरकार थी । " " पुलिस भी इस भ्रष्ट राजतन्त्र का ऐसा अंग है जिसे अमीर लोगों ने अपने हाथों की कठपुतली बनाकर मनमानी करना अपना लक्ष्य बना लिया है । ' एक ब्रेक के बाद में के . वी . की पत्नी मजदूरों पर होते लाठीचार्ज को देख कर कहती है " हद हो गई । यह देश एकदम बिक गया । यहाँ की पुलिस , सरकार , पार्लियामैट , सब ये जापानियों कोरियनों के साथ है । किस तरह मार रहे हैं ? यह पुलिस है या राक्षस " गुरुचरण भी अपनी डायरी में लिखता है , " किसी कम्पनी ने दूर के एक गाँव में पुलिस की मदद से गाँव वालों को भेड़ बकरियों की तरह उठाकर जेल भेज दिया । अतः जब जनता की रक्षक कहलाने वाली पुलिस ही भक्षक बन जाए तो स्थिति शोचनीयता का अनुमान सहजता से लगाया जा सकता है ।

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ के अन्तर्गत आर्थिक , राजनीतिक विसंगतियों एवम् विद्रूपताओं का व्यापक अंकन हुआ है जो बदल रहे समाज की वास्तविक स्थिति का सच्चा चित्र प्रस्तुत करता है ।

संदर्भ

1 . (धीरेन्द्र वर्मा (सम्पा) हिन्दी साहित्य कोश भाग -1 , ज्ञानमंडल लिमिटेड , वाराणसी , पंचम 2054 वि . पु . 242

2. कुलदीप कौर (डॉ .) , बलदेव वंशी का काव्य सामाजिक यथार्थ , अनंग प्रकाशन , नई दिल्ली , प्रथम संस्करण 2006 , पू 25

3. गोविंद मिश्र धूल पौधों पर , वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2008 , पृ . 96

4. अलका सरावगी , एक ब्रेक के बाद , राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली प्रथम संस्करण , 2008 , पृ . 168

5. गोविन्द मिश्र धूल पौधों पर , वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2008 , पु . 123

6. अलका सरावजी एक ब्रेक के बाद , राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2008 पू . 38

7. कृष्णा अग्निहोत्री , नानी अम्मा मान जाओ , किताबघर प्रकाशन , नई दिल्ली प्रथम संस्करण , 2008 , पू . 143

8. अलका सरावगी , एक ब्रेक के बाद , राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2008 , पू . 72

9. कृष्णा अग्निहोत्री नानी अम्मा मान जाओ , किताबघर प्रकाशन , नई दिल्ली , प्रथम सं 2008 , पू . 375

10. अलका सरावगी , एक ब्रेक के बाद , राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली , प्रथम सं . 2008 पू . 73

11. वही , पृ . 51

12. रवीन्द्र वर्मा , आखिरी मंजिल , राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली प्रथम संस्करण , 2008 , पृ . 13

13. अलका सरावगी , एक ब्रेक के बाद , राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली , प्रथम संस्करण 2008 , पृ . 171

14. वहीं ।